# वेदों में हमारा सामाजिक जीवन

## घनश्याम लाल माथुर

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। वह एकाकी नहीं है। उसका सम्बन्ध दम्पति, कुटुम्ब, जाति, समाज और संसार के समस्त प्राणि मात्र से है। इसलिए उसे सबके साथ प्रेम, दया और सहानुभूति के साथ व्यवहार करना चाहिए। वेदों में अनेक स्थानों पर इस सम्बन्ध में हमारा मार्गदर्शन किया गया है।

सर्व प्रथम दाम्पत्य जीवन पर हम देखते हैं –

या दम्पती समनसा सुनुत आ च धावतः।
देवासो नित्वयाशिरा॥ ऋग्वेद ८।३१।५
स्यानाद्योनेरपि धि बुध्यमानौ हसामुदौ महसा मोदमानौ।
सुगू सुपुत्रौ सुग्रहौ तराथो जीववुषसो विभाती॥
अथर्व १४।२।४३

अर्थात जो दम्पति एक मन होकर यज्ञ तथा उत्तम कामों के लिए साथ साथ दौड़ते हैं, और नित्य परमेश्वर की प्रार्थना करते हैं, वे देवता हैं। हे दम्पति! तुम दोनों इस सुखदायक घर में अच्छी प्रकार जागते हुए, हँसी खुशी के साथ, बड़े प्रेम से आनन्द मनाते हुए, सुन्दर सुपुत्रों और सुन्दर गृहस्थी वाले होकर प्रकाशयुक्त बहुत से प्रातःकालों को देखो। अर्थात लम्बी अवधि तक जीओ। इन वेद मंत्रो में दम्पति प्रेम की उत्कृष्ट भावना यह है कि दोनों एक मन होकर आनंदपूर्वक उत्तम कामों में लगे रहें और परस्पर प्रेम तथा विनोद के साथ व्यवहार करें।

इस दम्पति कर्तव्य के आगे कौटुम्बिक व्यवहार का वर्णन निम्न प्रकार से मिलता है –

अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु समताः।
जाया पत्ये मधुमती वाचं वदतु शन्तिवाम्॥२॥
मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा स्वसार मुतःस्वसा।
सम्यञ्चः सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया॥३॥
अथर्व ३।३०

अर्थात पुत्र पिता का आज्ञाकारी और माता का इच्छाकारी हो, तथा स्त्री पति से मधुर और शांत वाणी से बातचीत करे। भाई से भाई द्वेष न करे और न बहिन से बहिन ही ईर्ष्या करे। सब लोग अपने अपने व्रत अर्थात मर्यादा में रहकर सदैव आपस में भद्रभाषा से ही बातचीत करें। कैसा सुन्दर कौटुम्बिक व्यवहार है? इन समस्त कुटुम्बियों में माता का स्थान बहुत ऊँचा है, इसलिए वेद में माता की बड़ाई की गई है –

कुमारं माता युवतीः समुन्धं गुहा विभर्ति न ददाति पित्रे।
अनीक मस्य न मिनज्जनाअः पश्यन्ति निहित मरतौ॥
ऋ. ५।२।१

अर्थात युवती माता पुत्र को अपने ही गर्भ में धारण करती है, अपने तुल्य पिता को नहीं देती और न उसके बल को क्षीण होने देती, इसीलिए विद्वान पुरुष माता को प्रथम स्थान देते हैं। इस मंत्र में माता को सर्व श्रेष्ठ इसीलिए कहा गया है कि वह बराबरी का दावा करने

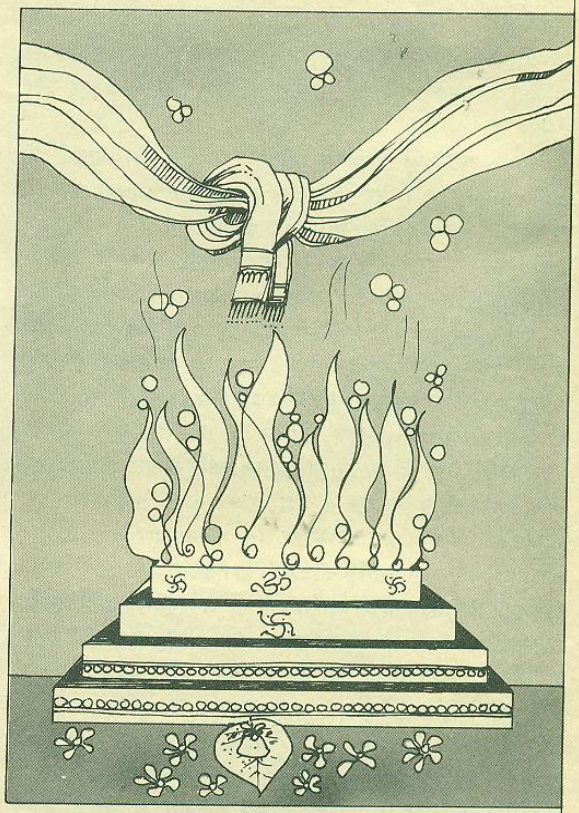

वाले अपने पति का बल नष्ट न करके गर्भ को अपने ही पेट में धारण करती है। और पति को उस कष्ट से बचा लेती है। इस मातृ भक्ति के आगे घर के बड़े बुढ़ों की सेवा से पवित्रता मानने का निर्देश निम्न प्रकार है –

पुनन्तु मा पितरः सोम्यासः पुनन्तु मा पितामहाः।
पुतन्तु प्रपिता महाः पवित्रेण शतायुषा।
पुतन्तु मा पितामहाः पुतन्तु प्रपितामहाः।
पवित्रेण शतायुषा विश्वमायुर्वाश्नवै॥३७॥
पुतन्तु मा देवजनाः पुतन्तु मनसा धियः।
पुतन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा॥३८॥
यजुर्वेद १९

अर्थात सौम्य पिता मुझे पवित्र करें, सौम्य पितामह मुझे पवित्र करें और सौम्य प्रपितामह, मुझे पवित्र करें जिससे मैं सौ वर्ष की आयु प्राप्त करूँ। मुझे समस्त देवजन पवित्र करें, मेरा मन और बुद्धि मुझे पवित्र करें, समस्त पञ्चभूत मुझे पवित्र करें और अग्नि मुझे पवित्र करे। इन मंत्रों में वृद्धों की सेवा से पवित्रता और दीर्घायु की प्राप्ति बतलाई गई है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि वैदिक शिक्षा में बडे बुढ़ों के मान

और सेवा के लिए कितना जोर दिया गया है।

इस कौटुम्बिक व्यवहार के आगे बढ़ कर अपने कुटुम्ब से सम्बन्ध रखने वाले अन्य जाति बंधुओं के लिए भी सुख की कामना की गई है। ऋग्वेद में लिखा है कि –

सस्तु माता सस्तु पिता सस्तु श्वा सस्तु विश्पतिः।
ससन्तु सर्वे ज्ञातयः सस्त्वयममितो जनः॥ ऋ. ७।५५।५
आत्मानं पितरं पुत्रं पौत्रं पितामहम्।
जायां जनत्री मातरं ये प्रियास्तानुप ह्वये॥ अ. ९।५।३०

अर्थात माता, पिता, जाति वाले, नौकर, चाकर और कुत्ते आदि पशु सब सुख से सोवें। आत्मीय जन, पिता, पुत्र, पौत्र, पितामह, स्त्री, पितामही, माता और जो स्नेही है, उनको मैं आदर से बुलाता हूँ। इन कुटुम्बियों और जाति से सम्बन्ध रखने वालों के साथ व्यवहार का वर्णन किया गया है।

मित्रों के साथ व्यवहार किस प्रकार करना चाहिए इसकी दिशा निम्न प्रकार है –

सर्वे नन्दन्ति यशसागतेन समासाहेन सख्या सखायः।
किल्बिषस्पृत्पितुषणिहर्व्ये पामंरहितो भवति वाजिनाय।
ऋ. १०।७१।१०
न स सखा यो न ददाति सख्ये सचामुवे सचमानाय पित्वः।
अपास्मात्प्रेदान्न तदोको अस्ति पृणन्तमन्यमरणंचिदिच्छेत्।
ऋ. १०।११७।४

अर्थात मित्र के सहवास और यश से सब आनन्दित होते हैं। मित्र धन देकर समाज के पापों को दूर करता है और सबका हितकारी होता है। वह सखा अर्थात मित्र नही है, जो धनवान होकर अपने मित्र की सहायता नहीं करता। उसका घर सच्चा घर नहीं है। उसके पास से तो सदैव दूर भागना चाहिए। इन दोनों मंत्रों में मैत्री का भाव और कर्तव्य अच्छी तरह बतला दिया गया है। और दिखलाया गया है कि मित्र को भी कुटुम्ब और जाति की भाँति सहायता देना चाहिए।

मित्रों से बढ़ कर आगे अन्य जातियों के प्रति सद्भाव का निर्देश निम्न प्रकार से है –

प्रियं मा कृणु देवेषु प्रियं राजसु ना कृणु।
प्रियं सर्वस्य पश्यत उत शुद्र उतार्ये। अथर्व १९।६२।१
रुचं तो घेहि ब्राह्मणेषु रुचं राजसु नस्कृधि।
रुचं विश्येषु शुद्रेषु मयि घेहि रुचा रुचम्। यजु १८।४८

अर्थात मुझको ब्राह्मणों में प्रिय कीजिए, क्षत्रियों में प्रिय कीजिए, वैश्यों और शुद्रों में प्रिय कीजिए। हमारी ब्राह्मणों में रुचि हो, क्षत्रियों में रुचि हो तथा रुचि में भी रुचि हो। इन मंत्रो में चारों वर्णों के साथ रुचि रखने और उनके बीच प्रिय होने का उपदेश है।

इसके आगे समस्त मनुष्य जाति के साथ कैसा व्यवहार किया जाय? उसका उपदेश भी मिलता है

समानी प्रपासह वो न्नभागः समाने योवत्रे सह वो युनज्मि।
सम्यज्चो ग्निं सपर्यतार नामिनिवामितः॥अथर्व ३।३०।६
सहृदयं सांमनस्यमविद्वेवं कृणोमि वः।
अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्सं जात मिवाहन्या॥
अथर्व ३।३०।१
ये समान्ताः समन सो जीवा जीवेषु मामकाः।
तेषां श्रीर्मयि कल्पता महिमं ल्लोके शतं समाः॥
यजु. १९।४६

अर्थात हम सब मनुष्यों के जलस्थान एक समान हों और तुम सब अन्न को एक ही समान बाँट चूँट कर लो। तुमको एक ही कौटुम्बिक बन्धन से बाँधता हूँ, इसलिए तुम सब मिल कर कर्म करो, जैसे रथचक्र के सब ओर एक ही नाभि में लगे हुए सारे कर्म करते है। मैं तुम्हारे हृदयों को एक समान करता हूँ और तुम्हारे मनों को विद्वेषरहित करता हूँ। तुम एक दूसरे को उसी तरह प्रीति से चाहो, जैसे गो अपने सद्यजात बछडे को चाहती है। जो जीव, मन, वाणी से इस प्रकार की समानता के पक्षपाती हैं, उन्हीं के लिए मैंने इस लोक में सौ वर्ष तक समस्त ऐश्वर्यों को दिया है। इन मंत्रो में मनुष्य मात्र के साथ समता का व्यवहार करने के लिए कहा गया है। इसमें यह अच्छी प्रकार प्रगट होता है कि समस्त मनुष्यों की सम्पत्ति, विचार और रहन सहन एवं समान होना चाहिए, तभी सौ वर्ष तक लोग सुख से जी सकते हैं। समस्त मनुष्यों के साथ इस प्रकार की व्यवहार करने की आज्ञा के बाद वेदों में अच्छी तरह कह दिया गया है कि मनुष्यों के साथ ही नहीं, प्रत्युत प्राणिमात्र के साथ प्रेम, दया और सहानुभूति का व्यवहार करना चाहिए।

यो वै कशायाः सपृ मधुनि वेद मधुमान् भवति।
ब्राह्मनश्च राजा च धेनुश्चानड्वाँच वीहिश्च यवश्च मधु
सप्रमम्। अथर्व ९।१।२२

हते हहं मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षान्ताम्।
मित्रस्याहंचक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा
समीक्षामगृहे॥ यजुर्वेद ३६।१८

अर्थात ब्राह्मण, क्षत्री, धनु, बैल, धान, यव, मिठाई ये सात मिठाइयाँ हैं। जो मनुष्य ज्ञान के इन सात मधुओं (मिठाइयों) को जानता है वह मधुमान, अर्थात मधुर हो जाता है। हे दृष्टिस्वरूप परमात्मन्! मेरी दृष्टि को दृढ़ कीजिए, जिससे सब प्राणी मुझे मित्र दृष्टि से देखें। इसी तरह मैं भी सब प्राणियों को मित्र दृष्टि से देखूँ और हम सब प्राणी परस्पर एक दूसरे को मित्र दृष्टि से देखें।

इस तरह हम देखते हैं कि इन मंत्रों में कुटुम्ब से लेकर समस्त संसार के मनुष्यों और समस्त प्राणियों के साथ प्रेम, दया, समता, सहानुभूति और मित्रता के भावों को प्रस्तुत किया गया है। संसार में समाज से सम्बन्ध रखनेवाले इससे अधिक उदात्त और व्यापक व्यवहार और कहीं भी इस धरती पर नहीं मिल सकते। परन्तु ये सामाजिक व्यवहार जब तक सदाचार की दृढ भूमिका पर स्थिर न हो, तब तक स्थिर नहीं हो सकते।

घनश्याम लाल माथुर
पुरालेख अधिकारी,
केआर ५०२ माला रोड,
रघुनाथ होस्टल के पीछे,
कोटा (राज) ३२४००१